आज के प्रारंभिक परीक्षा के लिए विषय

रोजगार से जुड़ी प्रोत्साहन (ELI) योजना

संदर्भ

भारत के प्रधानमंत्री के नेतृत्व में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने हाल ही में रोजगार से जुड़ी प्रोत्साहन (ELI) योजना को अपनी मंजूरी दे दी है।

रोजगार से जुड़ी प्रोत्साहन (ELI) योजना

- उद्देश्य: विनिर्माण पर विशेष ध्यान देते हुए, रोजगार सृजन को बढ़ावा देना, रोजगार योग्यता में सुधार लाना तथा सभी क्षेत्रों में सामाजिक सुरक्षा को बढ़ाना।
- शुभारम्भ और बजट:
  - प्रधानमंत्री की 5-योजना रोजगार पैकेज के हिस्से के रूप में केंद्रीय बजट 2024-25 में घोषित किया गया।
  - इसका लक्ष्य 4.1 करोड़ युवाओं को लाभ पहुँचाना है।
  - कुल बजट परिव्यय: ₹2 लाख करोड़।
- रोजगार सृजन लक्ष्य:
  - 2 वर्षों में 3.5 करोड़ से अधिक नौकरियाँ सृजित करने का लक्ष्य ।
  - पहली बार कार्यबल में प्रवेश करने वाले 1.92 करोड़ कर्मचारी शामिल हैं ।
- प्रोत्साहन अवधि:
  - योजना के अंतर्गत मिलने वाले लाभ उन नौकरियों पर लागू होंगे जो 1 अगस्त 2025 से 31 जुलाई 2027 के बीच सृजित होंगी।
- योजना संरचना – दो भाग:

  भाग **A:** पहली बार नौकरी करने वाले कर्मचारियों के लिए प्रोत्साहन
  - वे कर्मचारी जो पहली बार **EPFO (**कर्मचारी भविष्य निधि संगठन) में पंजीकृत हो रहे हैं, पात्र होंगे।
  - पात्रता: जिनका मासिक वेतन ₹1 लाख तक है।
  - लाभ: दो किश्तों में एक माह के वेतन के बराबर राशि (अधिकतम ₹15,000)।
  - भुगतान आधार आधारित भुगतान प्रणाली (**ABPS)** के माध्यम से प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (**DBT)** द्वारा।
- भाग **B:** नियोक्ताओं को सहायता
  - सभी क्षेत्रों में, विशेषकर विनिर्माण क्षेत्र में, नए रोज़गार सृजन हेतु प्रोत्साहन।
  - यदि किसी कर्मचारी को न्यूनतम 6 माह तक कार्यरत रखा जाता है, तो नियोक्ताओं को प्रति कर्मचारी प्रति माह ₹3,000 तक की राशि दो वर्षों तक प्रदान की जाएगी।
  - विशेष रूप से विनिर्माण क्षेत्र के लिए यह लाभ तीसरे और चौथे वर्ष तक विस्तारित रहेगा।
  - भुगतान **PAN** से जुड़े नियोक्ता खातों में सीधे किया जाएगा।
- मुख्य क्षेत्र:
  - यद्यपि यह सभी क्षेत्रों पर लागू है, लेकिन दीर्घकालिक रोजगार सृजन के लिए विनिर्माण क्षेत्र को विशेष प्रोत्साहन प्रदान किया जाता है।

स्रोत: पीआईबी

INS उदयगिरि

संदर्भ

मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (**MDSL**) द्वारा निर्मित यार्ड 12652**,** जिसका नाम उदयगिरि है**,** औपचारिक रूप से भारतीय नौसेना को सौंप दिया गया।

INS उदयगिरि के बारे में

- पृष्ठभूमि एवं निर्माण:
  - INS उदयगिरि (यार्ड 12652) परियोजना 17**A (P-**17**A)** के तहत निर्मित सात युद्ध-पोतों में से दूसरा है ।
  - मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (**MDSL),** मुंबई और गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एँड इंजीनियर्स (**GRSE),** कोलकाता में किया गया है ।
- वंशक्रम:
  - प्रोजेक्ट 17A शिवालिक श्रेणी (प्रोजेक्ट 17) युद्ध-पोत का उत्तराधिकारी है।
  - पूर्ववर्ती **INS** उदयगिरि की विरासत को पुनर्जीवित करता है , जो एक भाप चालित जहाज था जिसे 31 वर्षों की सेवा के बाद 2007 में सेवामुक्त कर दिया गया था ।
- क्षमताएँ:
  - बहु-मिशन युद्ध-पोत के रूप में डिजाइन किया गया , जो 'ब्लू वॉटर' नौसैनिक परिवेश में संचालन करने में सक्षम है ।
  - विशेष रूप से भारत के समुद्री क्षेत्रों में पारंपरिक और अपारंपरिक दोनों प्रकार के खतरों का मुकाबला करने के लिए सुसज्जित है ।
- प्रोजेक्ट 17**A** युद्ध-पोत की मुख्य विशेषताएँ:
  - पतवार का डिज़ाइन शिवालिक श्रेणी (P-17) से 4.54% बड़ा है।
  - उन्नत स्टील्थ तकनीक और आधुनिक हथियार एवं संवेदक प्रणालियों के साथ अधिक फुर्तीला एवं स्लीक डिज़ाइन।
  - संयुक्त डीजल या गैस (**CODOG)** प्रणोदन का उपयोग करता है , जिसमें शामिल हैं:
    - डीज़ल इंजन + गैस टरबाइन
    - कंट्रोलेबल पिच प्रोपेलर (सीपीपी)
    - एकीकृत प्लेटफॉर्म प्रबंधन प्रणाली (IPMS), जो स्वचालन और दक्षता को बढ़ाती है।
- हथियार और सेंसर:
  - सुपरसोनिक सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइलें .
  - मध्यम दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल (**MRSAM)** प्रणाली।
  - 76 मिमी नौसैनिक तोप , साथ ही 30 मिमी और 12.7 मिमी रैपिड-फायर क्लोज-इन वेपन सिस्टम।
  - अधिकांश हथियार प्रणालियाँ और सेंसर स्वदेशी निर्माताओं (**OEMs)** से प्राप्त किए गए हैं ।
- सामरिक महत्व:
  - रक्षा विनिर्माण में आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलेगा ।
  - भारत में आर्थिक विकास , रोजगार और **MSME** तथा नौसैनिक औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र के विकास को बढ़ावा देगा ।

स्रोत: द हिंदू

लौह अयस्क

संदर्भ

भारत का लौह अयस्क उत्पादन अप्रैल–मई में 0.60% की मामूली वृद्धि के साथ 53 मिलियन मीट्रिक टन (MMT) रहा, जो पिछले वर्ष इसी अवधि में 52.7 MMT था।

लौह अयस्क क्या है?

- लौह अयस्क ऐसे शैलों और खनिजों से बना होता है जिनसे धात्विक लौह को व्यवहार्य रूप से निष्कर्षित किया जा सकता है।
- सामान्य प्रकारों में हेमेटाइट , मैग्नेटाइट और टैकोनाइट शामिल हैं , जो लौह ऑक्साइड से भरपूर होते हैं।
- भारत में वर्तमान स्थिति
    - भारत लौह अयस्क उत्पादन में आत्मनिर्भर है।
    - वैश्विक लौह अयस्क उत्पादन में लगभग 7% का योगदान देता है ।
    - विश्व का चौथा सबसे बड़ा लौह अयस्क उत्पादकदेश है।
    - चीन के बाद विश्व में दूसरा सबसे बड़ा इस्पात उत्पादक है।
- भारत में लौह अयस्क का वितरण: भारत में एशिया का सबसे बड़ा लौह अयस्क भंडार है ।
    - कई खदानें कोयला क्षेत्रों के पास स्थित हैं , विशेष रूप से उत्तर-पूर्वी पठार में , जो संभार संबंधी लाभ प्रदान करती हैं।
    - प्रमुख लौह अयस्क उत्पादक राज्य (कुल भंडार का 95% हिस्सा):
        - ओडिशा : सुंदरगढ़, मयूरभंज और केंदुझार की पहाड़ी श्रृंखलाएँ (उदाहरण के लिए, बादामपहाड़, किरुबुरु, बोनाई)।
        - झारखंड : सिंहभूम में नोआमुंडी और गुआ जैसी प्राचीन खदानें ;
        - छत्तीसगढ़- दुर्ग , दंतेवाड़ा और बैलाडीला में आसपास के क्षेत्र।
        - कर्नाटक : सन्दूर-होस्पेट (बल्लारी), बाबा बुदान पहाड़ियाँ , कुद्रेमुख , शिवमोग्गा, चित्रदुर्ग, तुमकुरु।
        - महाराष्ट्र : चंद्रपुर, भंडारा, रत्नागिरी।
        - तेलंगाना : करीमनगर, वारंगल।
        - आंध्र प्रदेश : कुरनूल, कडप्पा, अनंतपुर।
        - तमिलनाडु : सेलम, नीलगिरी।
        - गोवा : एक महत्त्वपूर्ण लौह अयस्क उत्पादक राज्य।
- लौह अयस्क का महत्व:
    - अंतर्राष्ट्रीय व्यापार: भारत के हेमेटाइट और मैग्नेटाइट को उनकी उत्कृष्ट गुणवत्ता के कारण वैश्विक बाजारों में अत्यधिक महत्व दिया जाता है।
    - औद्योगिक अनुप्रयोग: लोहा और इस्पात उद्योग के लिए प्राथमिक कच्चा माल है।
    - लगभग 98% लौह अयस्क का उपयोग सीधे इस्पात निर्माण में किया जाता है , जो औद्योगिक बुनियादी ढांचे का एक महत्वपूर्ण घटक है।
    - आर्थिक महत्व: झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों की अर्थव्यवस्थाएँ लौह और मैंगनीज खनन गतिविधियों पर बहुत अधिक निर्भर हैं।

स्रोत: द हिंदू

निम्न दाब तंत्र और मैडेन-जूलियन दोलन (MJO)

संदर्भ

मानसून का समय से पहले आगमन विभिन्न कारणों से हुआ, जिनमें मैडेन जूलियन दोलन (MJO) का सक्रिय चरण और निम्न दाब तंत्र आदि शामिल हैं।

पृथ्वी के दाब तंत्र

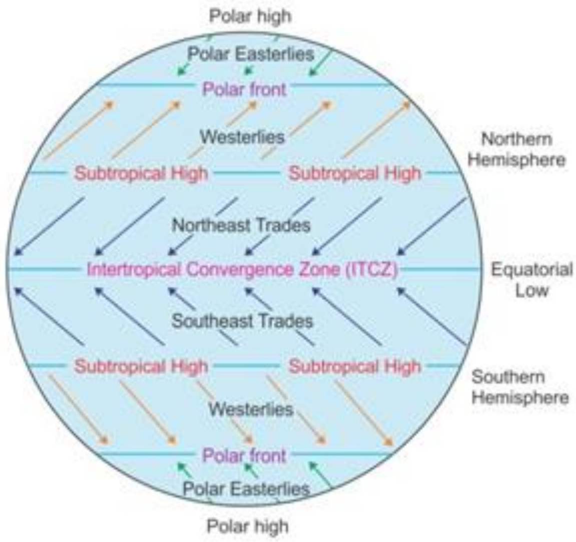

- दाब तंत्र क्या है? दाब तंत्र पृथ्वी की सतह पर एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ वायुमंडलीय दाब आस-पास के क्षेत्रों की तुलना में या तो अधिक या कम होता है। इन दाब अंतरों के कारण वैश्विक स्तर पर पवनें और मौसम की प्रणालियाँ संचालित होती हैं।
- दाब तंत्रों के प्रकार:
  - उच्च दाब तंत्र (प्रतिचक्रवाती) : वह क्षेत्र जहाँ वायुमंडलीय दाब आसपास के क्षेत्रों की तुलना में अधिक होता है।
  - विशेषताएँ:
    - वायु अवतलित होती है (नीचे उतरती है), जिससे संपीड़न और ऊष्मा उत्पन्न होती है।
    - परिणामतः आसमान साफ और मौसम स्थिर रहता है।
    - उत्तरी गोलार्ध में पवनें बाहर की ओर तथा दक्षिणावर्त दिशा में बहती हैं, जबकि दक्षिणी गोलार्ध में पवनें वामावर्त दिशा में बहती हैं।
  - निम्न दाब तंत्र (चक्रवात) : वह क्षेत्र जहाँ वायुमंडलीय दाब आसपास के क्षेत्रों की तुलना में कम होता है।
    - विशेषताएँ:
      - हवा ऊपर उठती है, ठंडी होती है और संघनित होती है, जिससे प्रायः बादल बनते हैं और वर्षा होती है।
      - यह अस्थिर मौसम से जुड़ा होता है जैसे—बादल, वर्षा या तूफान।
      - उत्तरी गोलार्ध में पवनें अन्दर की ओर तथा वामावर्त दिशा में बहती हैं, जबकि दक्षिणी गोलार्ध में दक्षिणावर्त दिशा में बहती हैं।
- महत्व:
  - व्यापारिक पवनों, पछुआ पवनों और ध्रुवीय पूर्वी पवनों जैसी वैश्विक पवन प्रणालियों को संचालित करता है।
  - मौसम पैटर्न, समुद्री धाराओं और जलवायु क्षेत्रों को प्रभावित करता है।

प्रमुख वैश्विक दाब पेटी

- भूमध्यरेखीय निम्न दाब पेटी (शांत क्षेत्र): भूमध्य रेखा के पास, गर्म हवा ऊपर उठती है, जिससे निम्न वायुदाब का क्षेत्र निर्मित होता है।
- उपोष्णकटिबंधीय उच्च दाब पेटी: 30° उत्तर और 30° दक्षिण के आसपास, हवा नीचे उतरती है, जिससे उच्च दाब (अश्व अक्षांश) का निर्माण होता है।
- उपध्रुवीय निम्न दाब पेटी: 60° उत्तर और 60° दक्षिण के आसपास, ऊपर उठती हवा के कारण निम्न वायुदाब का क्षेत्र निर्मित होता है।
- ध्रुवीय उच्च दाब पेटी: ध्रुवों के पास (90°N और 90°S), ठंडी अवतलित होती हवा उच्च वायुदाब क्षेत्र का निर्माण करती है।

मैडेन जूलियन दोलन (MJO)

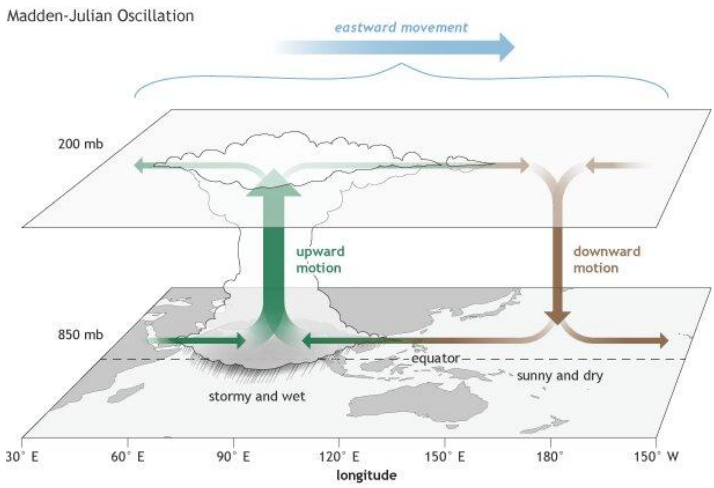

- **MJO क्या है?** यह मेघों, वर्षा, पवनों और वायुदाब की एक बड़े पैमाने पर होने वाली गतिशीलता है, जो पृथ्वी के उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में मुख्यतः हिन्द और प्रशांत महासागरों के ऊपर पूर्व की ओर गतिमान रहती है।
- प्रमुख विशेषताएँ:
    - समय-सीमा: आमतौर पर हर 30-60 दिनों में पुनरावृत्ति होती है।
    - गति: 4-8 मीटर/सेकंड की गति से पूर्व की ओर संचरित होती है।
    - संरचना: इसमें दो चरण शामिल हैं:
        - सक्रिय (संवहनी) चरण: संवहन, बादल और वर्षा में वृद्धि।
        - संदमित (शुष्क) चरण: संवहन में कमी, बादल कम होना, तथा वर्षा में कमी।
- क्रियाविधि:
    - प्रारंभ (**Initiation):** यह पश्चिमी हिन्द महासागर से आरंभ होती है।
    - प्रसार (**Propagation):** यह उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में पूर्व की ओर बढ़ती है और अफ्रीका, हिन्द महासागर, दक्षिण-पूर्व एशिया, प्रशांत महासागर, तथा कभी-कभी अमेरिका तक के मौसम को प्रभावित करती है।
    - अंतःक्रिया: वायुमंडलीय परिसंचरण को संशोधित करके मानसून, चक्रवात और वैश्विक मौसम पैटर्न को प्रभावित करता है।
- भारतीय मौसम पर प्रभाव:
    - मानसून: एक सशक्त MJO भारतीय मानसूनी वर्षा को उसकी स्थिति और चरण के आधार पर या तो बढ़ा सकता है या दबा सकता है।
    - चक्रवात: यह हिन्द महासागर में चक्रवात बनने की संभावनाओं को बढ़ा सकता है।
- महत्व:
    - अल नीनो और ला नीना घटनाओं (ENSO) को प्रभावित करता है।
    - यह विश्व भर में मौसम और वर्षा के पैटर्न को प्रभावित करता है, जिसमें दूरदराज के क्षेत्रों में तूफान और सूखा भी शामिल है।

स्रोत: इंडियनएक्सप्रेस

दलाई लामा

संदर्भ

14वें दलाई लामा, तेनज़िन ग्यात्सो, 6 जुलाई 2025 को 90 वर्ष के हो रहे हैं। यह एक महत्वपूर्ण पड़ाव है जिसे उन्होंने अपने पुनर्जन्म से संबंधित भविष्य की घोषणा के साथ चिह्नित किया है।

अगले दलाई लामा पर उत्तराधिकार विवाद

- दलाई लामा इस बात पर जोर देते हैं कि केवल तिब्बती और उनके धार्मिक संस्थान ही उनके उत्तराधिकारी को मान्यता दें, तथा गदेन फोडरंग ट्रस्ट की निगरानी में ऐसा किया जाए।
- बीजिंग ऐतिहासिक प्रक्रियाओं का हवाला देते हुए पुनर्जन्म प्रक्रिया पर अधिकार का दावा करता है और 2007 में बनाए गए नियमों के अंतर्गत राज्य की निगरानी को अनिवार्य करता है।

दलाई लामा के बारे में

- 1935 में तिब्बत के तकत्सेर में हुआ था , दो वर्ष की आयु में ही उन्हें 14वें दलाई लामा के रूप में पहचान मिली।
- मार्च 1959 में चीनी आक्रमण के बाद वे भारत भाग आये और 1960 तक धर्मशाला में निर्वासित सरकार की स्थापना की।
- तिब्बती बौद्ध धर्म में तुल्कु प्रणाली का उपयोग किया जाता है , जहाँ आध्यात्मिक नेता अपना कार्य जारी रखने के लिए पुनर्जन्म लेते हैं।
- दलाई लामा करुणा के बोधिसत्व, अवलोकितेश्वर का प्रतीक हैं ।
- लगभग 90 वर्ष की आयु में दलाई लामा ने कहा कि वे निर्णय लेंगे कि संस्था जारी रहनी चाहिए या नहीं , और यदि हाँ, तो 15वें अवतार का चयन कैसे किया जाएगा ।
- गदेन फोडरंग ट्रस्ट और अन्य वरिष्ठ मठ अधिकारियों के लिए लिखित दिशानिर्देश छोड़ने का इरादा रखते हैं ।

स्रोत: इंडियनएक्सप्रेस

वर्ल्ड ऑफ डेट रिपोर्ट 2025 2025

संदर्भ

हाल ही में, संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन (UNCTAD) द्वारा वर्ल्ड ऑफ डेट (ऋण) रिपोर्ट 2025 2025 जारी की गई।

UNCTAD का वर्ल्ड ऑफ डेट रिपोर्ट 2025 के मुख्य अंश

- वैश्विक ऋण रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुँचा: कुल सार्वजनिक ऋण 2024 में बढ़कर 102 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया , जो 2023 में 97 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर था।
- विकासशील देश असमान रूप से ऋण भार से ग्रस्त: निम्न और मध्यम आय वाले देशों के ऊपर अब 31 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर का ऋण है, जो वैश्विक ऋण का लगभग एक-तिहाई है। 2010 से इन देशों में ऋण की वृद्धि दर विकसित अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में दोगुनी रही है।
- अत्यधिक ब्याज भुगतान विकास को बाधित कर रहे हैं: विकासशील देशों ने 2024 में 921 अरब अमेरिकी डॉलर का शुद्ध ब्याज भुगतान किया—जो वर्ष-दर-वर्ष 10% की वृद्धि है।
    - कुल 61 देशों ने सरकारी राजस्व का 10% से अधिक हिस्सा सिर्फ ब्याज की अदायगी पर खर्च कर दिया।
- ऋण चुकौती सामाजिक व्यय से अधिक: लगभग 3.4 अरब लोग ऐसे देशों में रहते हैं, जहाँ स्वास्थ्य या शिक्षा पर खर्च की तुलना में ब्याज भुगतान पर अधिक व्यय किया जा रहा है।

तत्काल अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सुधार की आवश्यकता

UNCTAD ने इस संकट से निपटने हेतु एक समग्र सुधार एजेंडा अपनाने का आह्वान किया है:

- वैश्विक वित्तीय संरचना को अधिक समावेशी और विकास-उन्मुख बनाना।
- संकट की स्थिति में तरलता (liquidity) तंत्रों में सुधार करना।
- सुदृढ़ ऋण पुनर्गठन प्रक्रियाएँ स्थापित करना।
- ऋण प्रबंधन हेतु रियायती वित्त और तकनीकी सहायता का विस्तार करना।

स्रोत: **UNCTAD** प्रकाशन

महिलाओं और बच्चों को सशक्त बनाने वाली तकनीक

संदर्भ

विकसित भारत@2047 के विजन को प्राप्त करने के लिए महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने अपने कार्यक्रमों में प्रौद्योगिकी को एकीकृत किया है।

प्रौद्योगिकी के माध्यम से सशक्तिकरण हेतु प्रमुख सरकारी हस्तक्षेप

हस्तक्षेप/पहल	उद्देश्य	मुख्य विशेषताएँ एवं प्रौद्योगिकी एकीकरण	प्रभाव/परिणाम
सक्षम आंगनवाड़ी और पोषण ट्रैकर	पोषण सुधार व प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल को सशक्त करना; आंगनवाड़ियों का आधुनिकीकरण और पोषण वितरण की प्रभावी निगरानी।	स्मार्ट डिवाइस, वास्तविक समय डेटा प्रविष्टि, पोषण ट्रैकर के माध्यम से राष्ट्रव्यापी एकीकरण।	10.14 करोड़+ लाभार्थियों की ट्रैकिंग; सेवा वितरण में सुधार; प्रधानमंत्री उत्कृष्टता पुरस्कार (2025) से सम्मानित।
आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए डिजिटल प्रशिक्षण	आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की क्षमता निर्माण ताकि वे बच्चों को गुणवत्तापूर्ण पूर्व-विद्यालय शिक्षा और पोषण सेवाएँ प्रदान कर सकें।	मोबाइल उपकरणों के माध्यम से ई-लर्निंग मॉड्यूल और डिजिटल प्रशिक्षण।	प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा और पोषण पहुँच को बढ़ावा देना।
पोषण वितरण में चेहरे की पहचान	वास्तविक और पात्र लाभार्थियों को ही पोषण सहायता प्राप्त हो, ताकि लीकेज व धोखाधड़ी रोकी जा सके।	लाभार्थी सत्यापन के लिए बायोमेट्रिक (चेहरे से) प्रमाणीकरण।	दोहराव में कमी; योग्य लाभार्थियों को प्रत्यक्ष लाभ।
शी-बॉक्स पोर्टल	कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न की शिकायतों हेतु एकल-पटल सुविधा प्रदान करना, जिससे महिलाओं की सुरक्षा व गरिमा सुनिश्चित हो सके।	PoSH अधिनियम के तहत शिकायत दर्ज करने, ट्रैकिंग और निवारण के लिए ऑनलाइन प्लेटफॉर्म।	तीव्र, सुलभ एवं पारदर्शी शिकायत निवारण।
मिशन शक्ति डैशबोर्ड और ऐप	हिंसा का सामना कर रही महिलाओं को एकीकृत, त्वरित सहायता प्रदान करना, उन्हें एकल-खिड़की संकट केंद्रों और संबंधित सेवाओं से जोड़ना।	लोकेशन-आधारित सहायता एवं निगरानी हेतु ऐप और डैशबोर्ड।	राष्ट्रव्यापी कवरेज; संकटग्रस्त महिलाओं को समय पर सहायता।
प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना (**PMMVY**)	सुरक्षित मातृत्व को बढ़ावा देना; गर्भवती व स्तनपान कराने वाली महिलाओं को विश्राम और पोषण हेतु आंशिक वेतन क्षतिपूर्ति एवं वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करना।	डिजिटल पंजीकरण, आधार आधारित प्रमाणीकरण, प्रत्यक्ष नकद अंतरण, डैशबोर्ड।	4 करोड़ से अधिक महिलाओं को ₹19,000+ करोड़ हस्तांतरित; पारदर्शी, कुशल लाभ वितरण।

कैरिंग्स पोर्टल (**CARINGS –** दत्तक ग्रहण)	गोद लेने की प्रक्रिया को सरल और पारदर्शी, कुशल और सभी हितधारकों के लिए जवाबदेह बनाना।	दत्तक मामलों और बाल देखभाल संस्थानों के अभिलेखों का ऑनलाइन ट्रैकिंग व डिजिटल प्रसंस्करण।	गोद लेने में अधिक पारदर्शिता, दक्षता और निगरानी।
मिशन वात्सल्य डैशबोर्ड	बाल संरक्षण एवं कल्याण को सशक्त बनाना; विभिन्न योजनाओं, सेवाओं और आंकड़ों को एकीकृत मंच पर समन्वित करना।	रीयल-टाइम निगरानी, डेटा एकीकरण, हितधारकों के बीच समन्वय।	बाल संरक्षण, निगरानी और कार्यक्रम क्रियान्वयन में सुधार।
राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग के प्लेटफॉर्म	बाल अधिकारों के उल्लंघन की निगरानी करना, रिपोर्ट करना और उसका समाधान करना तथा देखभाल और संरक्षण की आवश्यकता वाले बच्चों के लिए समय पर हस्तक्षेप सुनिश्चित करना।	उल्लंघनों की रिपोर्टिंग, कार्रवाई की निगरानी और डेटा एनालिटिक्स हेतु डिजिटल प्लेटफॉर्म।	बाल अधिकारों का संरक्षण बढ़ाना तथा समयबद्ध शिकायत निवारण में वृद्धि।

स्रोत: द हिंदू

संपादकीय सारांश

भू-भरण, अपशिष्ट को जलाने और सन्निक्षेपण के कारण अरावली का निम्नीकरण

संदर्भ

'द स्टेट ऑफ द हरियाणा अरावलीज़: सिटीज़न्स रिपोर्ट – पार्ट 2' शीर्षक वाली एक हालिया रिपोर्ट में हरियाणा में अरावली पर्वतमाला में अवैध रूप से अपशिष्ट को फेंकने और जलाने के कारण गंभीर पर्यावरणीय निम्नीकरण और सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट के बारे में चिंता जताई गई है।

अरावली के बारे में

- अरावली पर्वतमाला विश्व की प्राचीनतम पर्वतमालाओं में से एक है, जिसकी उत्पत्ति हिमालय से भी पहले हुई थी।
- भौगोलिक विस्तार: यह पर्वतमाला उत्तर-पश्चिम भारत में स्थित है, जो गुजरात, राजस्थान, हरियाणा और दिल्ली राज्यों में लगभग 692 किलोमीटर तक फैली हुई है।

अरावली को संरक्षित करने की आवश्यकता

- पारिस्थितिक महत्व: तेंदुए, लकड़बग्घे और 200 से अधिक पक्षी प्रजातियों सहित विविध वनस्पतियों और जीवों का पर्यावास है।
- जलवायु विनियमन: भारत की मानसून प्रणाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है तथा दिल्ली -एनसीआर जैसे आसपास के क्षेत्रों में तापमान को नियंत्रित करने में मदद करता है।
    - यह पर्वतमाला एक प्राकृतिक अवरोधक के रूप में कार्य करती है तथा थार रेगिस्तान को राजस्थान और गुजरात की उपजाऊ कृषि भूमि पर अतिक्रमण करने से रोकती है .
- जल सुरक्षा: भूजल पुनर्भरण और स्थानीय जल विज्ञान को बनाए रखने के लिए आवश्यक।
- वायु गुणवत्ता: यह हरित फेफड़े के रूप में कार्य करता है, जिससे क्षेत्र में वायु प्रदूषण में उल्लेखनीय कमी आती है।
- जैव विविधता संरक्षण: यह अनेक दुर्लभ और स्थानिक प्रजातियों को संरक्षण प्रदान करता है, जिससे यह पारिस्थितिक रूप से मूल्यवान हॉट-स्पॉट बन जाता है।

निम्नीकरण के लिए जिम्मेदार गंभीर कारक

- अवैध खनन और वनों की कटाई: खनिजों के व्यापक निष्कर्षण के कारण आवास विनाश, मृदा अपरदन और वन आवरण की हानि होती है।
- अवैध अपशिष्ट सन्निक्षेपण: 100 से अधिक स्थानों की पहचान की गई है जहाँ ठोस, रासायनिक और औद्योगिक अपशिष्ट अवैध रूप से डंप किए जाते हैं, जिससे मिट्टी और भूजल दूषित हो रहा है।
- अपशिष्ट जलाना: अनियंत्रित रूप से जलाने से जहरीले रसायन और प्रदूषक हवा में फैलते हैं, जिससे सार्वजनिक स्वास्थ्य और पर्यावरण पर गंभीर प्रभाव पड़ता है।
- कमजोर निगरानी और प्रवर्तन: अप्रभावी नियामक निरीक्षण से अपशिष्ट निपटान, खनन और अतिक्रमण जैसी अवैध गतिविधियों को बढ़ावा मिलता है।
- शहरीकरण संका दबाव: शहरी बस्तियों का विस्तार, विशेष रूप से गुरुग्राम और फरीदाबाद के आसपास, प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र का सिकुड़ना।

अरावली निम्नीकरण के प्रभाव

- पारिस्थितिकी और जैव विविधता हानि: आवास में कमी के कारण वन्यजीव आबादी (तेंदुए, लकड़बग्घा, पक्षी प्रजातियाँ) में गिरावट आ रही है।
    - देशी पौधों की प्रजातियों का विनाश, स्थानीय जैव विविधता पर प्रतिकूल प्रभाव।
- भूजल प्रदूषण और कमी: अवैध अपशिष्ट सन्निक्षेपण से भूजल भारी धातुओं, रोगाणुओं और विषैले रसायनों से संदूषित हो जाता है।

- ○ वनों की कटाई और खनन के कारण भूजल पुनर्भरण क्षमता में कमी।
- वायु प्रदूषण और सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट: अपशिष्ट जलाने से उत्पन्न विषाक्त उत्सर्जन से श्वसन संबंधी रोग, एलर्जी, कैंसर और अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।
    - ○ वायु की गुणवत्ता में गिरावट, विशेषकर दिल्ली-एनसीआर को प्रभावित कर रही है।
- बढ़ता मरुस्थलीकरण और जलवायु परिवर्तन प्रभाव: वन क्षेत्र की हानि से मृदा अपरदन और मरुस्थलीकरण में तेजी आती है।
    - ○ तापमान को नियंत्रित करने की क्षमता में कमी, जिससे आसपास के शहरी क्षेत्रों में ऊष्ण तरंगें (लू) बढ़ जाएँगी।
- सामाजिक-आर्थिक परिणाम: दूषित जल और मृदा क्षरण के कारण कृषि और पशुधन पर नकारात्मक प्रभाव।
    - ○ पर्यटन क्षमता में गिरावट और इससे संबंधित आर्थिक नुकसान।

अरावली पुनर्स्थापन के लिए पहल/परियोजना

- विस्तृत कार्य योजना: हाल ही में सरकार ने अरावली परिदृश्य पुनरुद्धार के लिए एक विस्तृत कार्य योजना का अनावरण किया।
- हरित भारत के लिए राष्ट्रीय मिशन (2014): मिशन के हाल ही में संशोधित दस्तावेज में कहा गया है कि अरावली जैसे संवेदनशील परिदृश्यों में हस्तक्षेप करने के लिए 'सूक्ष्म पारिस्थितिकी तंत्र' दृष्टिकोण अपनाया जाएगा।

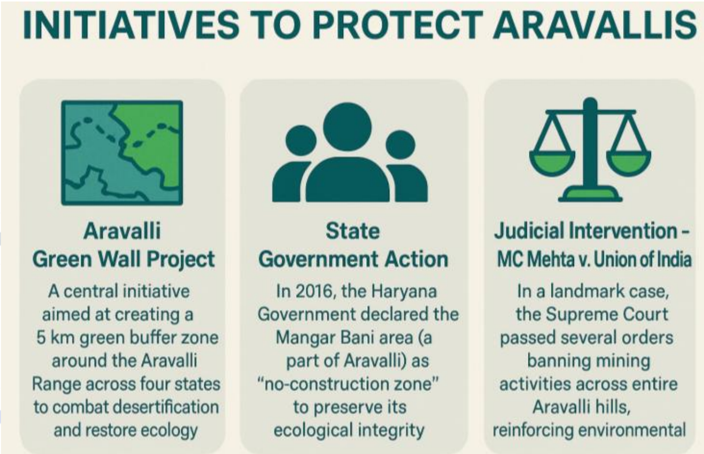

प्रस्तावित समाधान

- कानूनी संरक्षण और 'नो-गो' (निषिद्ध) क्षेत्र: संपूर्ण हरियाणा अरावली पर्वतमाला को खनन, सन्निक्षेपण, अपशिष्ट जलाने और निर्माण के लिए 'नो-गो' (निषिद्ध) क्षेत्र घोषित किया जाए।
- निगरानी एवं जवाबदेही को मजबूत करना: उपायुक्तों के नेतृत्व में तथा मुख्य सचिव की देखरेख में अरावली संरक्षण टास्क फोर्स का गठन ।
    - ○ विशेषकर राज्य की सीमाओं के पास 24x7 निगरानी और ड्रोन निगरानी की व्यवस्था।
- अपशिष्ट प्रबंधन नियमों का सख्त कार्यान्वयन: ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 को लागू करना , जिसमें स्रोत पृथक्करण, खाद बनाने और पुनर्चक्रण पर बल दिया जाए।
- भू-भरण को स्थानांतरित करना: प्रदूषण को कम करने के लिए बंधवाड़ी जैसे मौजूदा भू-भरण को पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों से दूर स्थानांतरित करना चाहिए।
- जागरूकता और सामुदायिक सहभागिता: स्वतंत्र पर्यावरणीय आकलन आयोजित करना।
    - ○ स्थानीय समुदायों को पर्यावरणीय शिक्षा एवं सतत व्यवहार हेतु प्रोत्साहनों के माध्यम से जोड़ा जाए, और एकल-उपयोग प्लास्टिक पर सख्त प्रतिबंध लगाया जाए।

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस